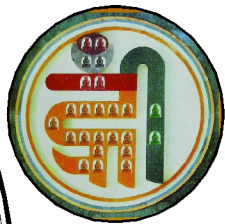


बाल-विज्ञान (नैतिक शिक्षा भाग 1)



: लेखक :-

प.पू. विश्वहितैषी, राष्ट्रसंत, गणाचार्य, युगप्रमुख श्रमणाचार्य,

श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज



-: प्रकाशक :-

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ

जैन कीर्तिस्तम्भ, बस स्टैण्ड रोड, भिण्ड (म.प्र.)

प्रसंग :



: परम पूज्य युगप्रमुख श्रमणाचार्य, राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज के “राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण महोत्सव” वर्ष 2016-2017 के सुअवसर पर

कृति :

बाल-विज्ञान भाग 1

लेखक :

परम पूज्य युगप्रमुख श्रमणाचार्य, गणाचार्य
श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज

संस्करण :

2016

प्रतियाँ :

2000

पुण्यार्जक :

1. श्रीमान् देवेन्द्रकुमारजी-श्रीमती सकूल बाहुबली कठरया
श्रीमती मीनाबाई, स्व. हुकुमचंद कठरया
श्रीमती मीना कलश कठरया
2. श्रीमान् संतोष कुमार-श्रीमती सुलेचना बुखारिया
वैभव, समृद्धि बुखारिया

मूल्य :

15.00

प्राप्ति स्थान :

1. श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ
चैत्यालय मंदिर, बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
संपर्क सूत्र-पं. वीरेन्द्र जैन, मो. 9754803220
 2. आचार्य श्री विरागसागर विद्यापीठ (बी.एड. कॉलेज)
पुष्प विहार कॉलौनी, बीना- 470113,
जिला- सागर (म.प्र.) मो. 9425135816
 3. विराग फाउण्डेशन
सी/ओ, श्री अरुण कोटडिया, 11-ए. विक्रम नगर
सोसायटी, उस्मानपुरा, अहमदाबाद- 380013
(गुज.) मो. 9825900124
 4. श्री भूपेन्द्र शांतिलाल शाह
13, वृंदावन सोसायटी, डेरी रोड, मेहसाना-2
(गुज.) मो. 9898494914, 9829452020
 5. विराग महिला मंच, बोरीवली, मुंबई (महा.)
 6. पुष्पा जी, जयपुर (राज.)
 7. तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
 8. पंकज जैन, विराग युवा मंच, इन्दौर (म.प्र.)
- मुद्रक : तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर मो. 9314962474/75

जीवन की महत्त्वपूर्ण झांकियाँ

परम पूज्य गणाचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज



- पूर्व नाम : अरविन्द जैन (टिन्नु)
- जन्म : 2 मई, 1963, गुरुवार
(वैशाख शुक्ला 9, संवत् 2020, पथरिया)
- माता-पिता : श्रीमती श्यामादेवी जैन
(समाधिस्थ पू. श्रमणी आर्यिका विशांतश्री माताजी)
ब्र.श्री कपूरचन्दजी जैन
(संघस्थ पू.क्षुल्लक श्री 105 विश्ववन्द्य सागर जी महाराज)
- बहिन : श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
- भाई : श्री विजयकुमार, श्री सुरेन्द्रकुमार, बा.ब्र. श्री नरेन्द्र भैयाजी
- लौकिक शिक्षा : इण्टर मध्यमा (पथरिया, श्री शांति निकेतन, दि.जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी, म.प्र.)
- क्षुल्लक दीक्षा : 20 फरवरी, 1980
(फाल्गुन शु. 5 सं. 2036 बुढ़ार, शहडोल म.प्र.)
- नामकरण : पूज्य क्षु. श्री 105 पूर्णसागरजी महाराज
- क्षु. दीक्षा गुरु : प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी महा.
- मुनि दीक्षा : 9 दिसम्बर, 1983 (मगसर शु. 5 वि.सं. 2040), औरंगाबाद (महा.)
- मुनि दीक्षा गुरु : प.पू.निमित्तज्ञानी आचार्य श्री 108 विमलसागरजी महाराज
- आचार्य पद : 8 नवम्बर, 1992 (का. शु. 13वि.सं. 2049) रविवार, द्रोणगिरी
- संयमी सृजन : आचार्य-8, मुनि - 70, गणिनी आर्यिका-4, आर्यिका-64, ऐलक-5, क्षुल्लक -29, क्षुल्लिका- 23 कुल - 203
- प्रशिष्य : 100 से अधिक
- समाधि सल्लेखनाएँ : लगभग 85 एवं अनेक तिर्यंच प्राणी
- चातुर्मास : 1980 से 2016 तक क्रमशः दुर्ग (छत्तीसगढ़), नागपुर (महाराष्ट्र), कारंजा लाड (महाराष्ट्र), कारंजालाड (महाराष्ट्र), नागपुर (महाराष्ट्र), भावनगर (गुजरात), पाँचवा (राज.), निमाज (राज.), जयपुर (राज.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), टीकमगढ़ (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), बीना (म.प्र.), ललितपुर (म.प्र.), मढ़ियाजी (जबलपुर), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), शिखरजी (झारखण्ड), गया (बिहार), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), भिलाई (छत्तीसगढ़), कारंजालाड (महा.) मूडबिट्टी (कर्नाटक), मेलचित्तामूर (तमिलनाडू), उद्गांव (महा.), मुम्बई (महा.), गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.),

अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.), श्रेयांसगिरी (म.प्र.), पथरिया (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.)।

साहित्य सृजन : 1. बारसाणुवेक्खा ग्रन्थ पर 1100 पृष्ठीय “सर्वोदया” संस्कृत टीका, 2. रयणसार ग्रन्थ पर 1500 पृष्ठीय “रत्नत्रयवर्धिनी” संस्कृत टीका, श्रमण संबोधनी टीका लेखन जारी है, 3. अनेक शोधात्मक, चिन्तनशील, बालकोपयोगी कथा, अनुवाद, गद्य, संपादित साहित्य, जीवनी एवं प्रवचन साहित्य 150 से अधिक ग्रंथ।

पंचकल्याणक : लघु वृहद् मिलाकर-67

उपाधियाँ : डॉक्ट्रेट आदि 44 से अधिक

सिद्धांत वाचनाएँ : धवल ग्रन्थ की 16 पुस्तकें तथा जयधवल ग्रंथ की 6 पुस्तकें, शेष जारी हैं।

गोष्ठियाँ : विद्वत्, शिक्षक, प्राचार्य, न्यायाधीश-वकील, डॉक्टर्स, शासनिक।

अहिंसा, शाकाहार एवं व्यसन मुक्ति

अभियान : भिण्ड (म.प्र.), बीना (म.प्र.), भिलाई (छ.ग.), कारंजा (महा.), मेलचित्तामूर (तमिल.), उद्गाँव (महा.), गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.) श्रेयांसगिरी (म.प्र.), पथरिया (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), जिसमें 18 लाख से अधिक छात्र-छात्रायेँ व्यसनमुक्त, शाकाहारी एवं अहिंसा के उपासक बन चुके हैं।

शिविर : प्रतिवर्ष श्री विराग सम्यग्ज्ञान शिविर, प्रतिभा संस्कार शिविर, पूजन प्रशिक्षण शिविर, भक्तामर शिविर, श्रावक संस्कार शिविर आदि।

विशेष प्रवचन : कॉलेज, स्कूल, जेल, न्यायालय, गौशाला, वृद्धाश्रम, गुरुकुल, मुख्य चौराहे आदि पर हुए।

जेल प्रवचन : भिण्ड, टीकमगढ़, दुर्ग, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, जयपुर, अजमेर, इन्दौर, पन्ना, दमोह।

न्यायालय प्रवचन: अजमेर

पगविहार : 70,000 किलोमीटर से अधिक।

संघ सम्मेलन : भिण्ड, श्रेयांसगिरी, बीना, ललितपुर, श्रवणबेलगोला, औरंगाबाद, जयपुर।

वृहद् यति सम्मेलन:

एवं युगप्रतिक्रमण जयपुर (200 शिष्य-प्रशिष्य, अन्य साधु भी)

श्रमण-श्रमणी की प्राचीन परम्परा की पुनः स्थापना।

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ परिचय

विद्यापीठ की स्थापना 1988 में हुई थी। इसका प्रारम्भ में अस्थाई संचालन कार्यालय जैन चैत्यालय मंदिर बताशा बाजार, भिण्ड में रखा गया था। लेकिन वर्तमान में स्टैण्ड रोड, कीर्तिस्तंभ परिसर में एक विशाल भवन का निर्माण हो चुका है। इस विद्यापीठ की स्थापना दिगम्बर जैन समाज ने पूज्य आचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज के सदुपदेशों से प्रभावित होकर की है तथा यह एक संरक्षक मंडल के मार्गदर्शन में प्रबन्धकारिणी कमेटी द्वारा संचालित है। कमेटी के चुनाव की विधिवत् व्यवस्था है। इसके संचालन में दिगम्बर जैन समाज के अतिरिक्त अन्य किसी वर्ग से या शासन से वित्तीय सहायता नहीं ली जाएगी।

विद्यापीठ का प्रमुख लक्ष्य जैन समाज को सुसंगठित करना, जैन आचार-धर्म संस्कृति एवं साहित्य का प्रचार-प्रसार करना, तदनुरूप संस्थाओं की स्थापना एवं उनका संचालन करना (जैसे- प्रकाशन संस्थान, शोध संस्थान, छात्रावास, जैन विद्यालय, पाठशाला, व्रती आश्रम, जैन परीक्षा बोर्ड) प्रमुख लक्ष्य है जिससे जैन समाज की नई पीढ़ी धर्म संस्कारों से परिपूर्ण होकर धर्म, तीर्थ और व्रतियों की रक्षा का दृढ़ संकल्प लेकर समाज सेवा कर सके। निराश्रित भाई-बहनों एवं विधवा बहनों की सहायता हेतु योजनाएँ प्रारम्भ करने के प्रस्ताव हैं।

सम्प्रति विद्यापीठ के अन्तर्गत 15 पाठशालाएँ चल रहीं हैं जिनमें 1200 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड द्वारा परीक्षा की व्यवस्था है। अन्य पाठशालाओं को भी बोर्ड से संबद्ध होने की पूर्ण सुविधा है।

विद्यापीठ प्रबन्धकारिणी अध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार जैन एवं परम पूज्य बालयोगी, ज्ञाश्रमण आचार्य 108 विरागसागर जी महाराज के आशीर्वाद से इसकी व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क स्थापित करें। पाठशाला संचालक गण परीक्षा बोर्ड से संबद्धता हेतु शीघ्र आवेदन कर छात्रों को इस वर्ष परीक्षा में शामिल करें।

अध्यक्ष

वीरेन्द्र कुमार जैन

डोली रेडिमेड सदर बाजार, भिण्ड

गुरुवाणी.....

प्राचीन समय में हर मानव श्रमण संस्कृति के अनुसार ही अपने जीवन को बनाता था, उस समय की गुरुकुल शिक्षाएँ थी। हर गुरुकुल में धर्म शिक्षा के साथ-साथ लौकिक शिक्षा दी जाती थी, ताकि विद्यार्थी अपने आपको पापाचरण से बचाकर सदाचार की ओर प्रवृत्त कर सकें। धर्माचरण पूर्ण शिक्षा ही प्राणियों को सुख शान्ति की जन्म जननी है।

बिना शिक्षा के सत्य ज्ञान नहीं हो सकता, और सत्य ज्ञान के बिना जीवन पापाचरण से बचकर सुखी भी नहीं बन सकता— जब हम स्वयं सुखी नहीं बन पाये तो फिर परिवार, समाज, नगर, देश, राष्ट्र आदि को कैसे सुखी बना सकते हैं। अतः आज आवश्यकता है कि मानव मात्र अपने जीवन को धर्म ज्ञान एवं आचरण से सुसंस्कारित करें। ताकि वे स्वयं को सुखी बनाते हुए विश्व के प्राणी मात्र को सुखी बनाने में मार्ग दर्शक हों। ऐसे ही प्राणियों से परिवार, समाज, राष्ट्र, आदि में सुख शान्ति की आशा हो सकती है, दूसरे से नहीं।

इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर इस कृति का सृजन किया गया है। विश्वास है कि बाल विज्ञान आबाल वृद्धों को नैतिकता की जागृति के साथ-साथ दीपिका का काम करेगी। आशा है सभी धर्म प्रेमी सज्जन पूर्ववत् इसका समादर करेंगे।

ॐ नमः श्री वीतरागाय नमः
श्री जिन मुखोद्भव श्रुताय नमः
परम निर्ग्रन्थ गुरुभ्यो नमः

— गणाचार्य विराग सागर



प्रार्थना

रचयिता: 105 शुल्लक श्री पूर्णसागर जी (प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज)

पंच प्रभु को नमन करेंगे, भजन करेंगे जपन करेंगे।
कर्तव्यशील हम सदा बनेंगे, सत्पुरुषों का मार्ग गहेंगे।

सूर्योदय से पूर्व उठेंगे, उठते ही प्रभु नाम भजेंगे।
दिया हुआ फिर पाठ करेंगे, तदनंतर गृह कार्य करेंगे॥

जिनेन्द्र प्रभु का दर्श करेंगे, गुरुजन का सम्मान करेंगे।
बिनाछना जल काम न लेंगे, रात्रि भोजन त्याग करेंगे॥

खूब पढ़ेंगे मनन करेंगे, कभी किसी से नहीं लड़ेंगे।
व्यर्थ कभी नहीं बात करेंगे, दिया हुआ नित पाठ पढ़ेंगे ॥

सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे, कभी किसी से नहीं डरेंगे।
गाली मुख से कभी न देंगे, मैत्री सबसे नित्य करेंगे॥

निंदा किसी की नहीं करेंगे, पापों का हम त्याग करेंगे।
ब्रह्मचर्य व्रत हृदय धरेंगे, लालच से प्रभु दूर रहेंगे॥

सरल सत्य व्यवहार करेंगे, णमीकार नित जाप करेंगे।
सदाचार ससपान करेंगे, शीघ्र पूर्ण भगवान बनेंगे॥



अनुक्रमणिका

प्रथम भाग

पंच परमेष्ठी	:	9
मंगल	:	14
तीर्थङ्कर	:	17
श्री 1008 महावीर स्वामी	:	26
देव दर्शन स्तुति	:	29
जीव : त्रस और स्थावर	:	31
चार गतियाँ	:	36
बारह भावना	:	40

बाल-विज्ञान

प्रथम भाग

पाठ - 1

पंच परमेष्ठी



- प्र. 1 नमोकार क्या है?
उ. नमोकार एक मंत्र है।
- प्र. 2 नमोकार मंत्र किसे कहते हैं?
उ. जिस मंत्र में पंचपरमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है उसे नमोकार मंत्र कहते हैं।
- प्र. 3 परमेष्ठी किसे कहते हैं?
उ. जो परम पद में स्थित हों उन्हें परमेष्ठी कहते हैं।
- प्र. 4 ये परमेष्ठी कब से हैं?
उ. इनका कोई प्रारंभ नहीं है, ये अनादि काल से ही होते आ रहे हैं।
- प्र. 5 फिर ये क्रम कब तक चलता रहेगा?
उ. इनका कोई अन्त नहीं है। ये अनन्त काल तक होते रहेंगे।
- प्र. 6 नमोकार मंत्र का शुद्ध उच्चारण करते हुए उसका अर्थ समझाओ?
नमो अरिहंताणं अरिहन्तों को नमस्कार हो।
नमो सिद्धाणं सिद्धों को नमस्कार हो।
नमो आइरियाणं आचार्यों को नमस्कार हो।
नमो उवज्झायाणं उपाध्यायों को नमस्कार हो।
नमो लोए सव्वसाहूणं लोकवर्ती सब साधुओं को नमस्कार हो।
- प्र. 7 नमोकार मंत्र में कितने पद हैं?
उ. नमोकार मंत्र में पाँच पद हैं- 1. नमो अरिहंताणं, 2. नमो सिद्धाणं, 3. नमो आइरियाणं, 4. नमो उवज्झायाणं, 5. नमो लोए सव्वसाहूणं।
- प्र. 8 नमोकार मंत्र में कितने अक्षर हैं, समझाइये?
उ. नमोकार मंत्र में पैंतीस अक्षर हैं-

णमो अरिहंताणं में सात, णमो सिद्धाणं में पाँच, णमो आइरियाणं में सात, णमो उवज्झायाणं में सात, णमो लोए सव्वसाहूणं में नौ अक्षर हैं। इस प्रकार कुल $(7+5+7+7+9=35)$ अक्षर होते हैं।

प्र. 9 णमोकार मंत्र में कितनी मात्राएँ हैं?

उ. णमोकार मंत्र में अट्ठावन मात्राएँ हैं-

णमो अरिहंताणं में ग्यारह, णमो सिद्धाणं में नौ, णमो आइरियाणं में ग्यारह, णमो उवज्झायाणं में बारह, णमो लोए सव्वसाहूणं में पन्द्रह मात्राएँ हैं।

प्र. 10 पाँचों परमेष्ठियों के अलग अलग नाम गिनाओ?

उ. 1. श्री अरिहंत जी, 2. श्री सिद्ध जी, 3. श्री आचार्य जी, 4. श्री उपाध्याय जी, 5. श्री सर्वसाधु जी।

प्र. 11 अरिहंत परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उ. जिन्होंने चार घातिया कर्मों को नष्ट कर दिया है उन्हें अरिहंत परमेष्ठी कहते हैं।

प्र. 12 सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उ. जिन्होंने समस्त कर्मों को नष्ट कर दिया है उन्हें सिद्ध परमेष्ठी कहते हैं।

प्र. 13 आचार्य परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उ. जो मुनि पंचाचारों का पालन स्वयं करते हैं व अन्य मुनियों से पालन कराते हैं, उन्हें आचार्य परमेष्ठी कहते हैं।

प्र. 14 उपाध्याय परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उ. जो मुनि स्वयं पढ़ते हैं एवं अन्य साधुओं को पढ़ाते हैं, उन्हें उपाध्याय परमेष्ठी कहते हैं।

प्र. 15 साधु परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उ. जो मुनि विषय-कषाय, आरम्भ और परिग्रह से रहित हैं एवं जो ज्ञान, ध्यान एवं तप में लीन रहते हैं, उन्हें साधु परमेष्ठी कहते हैं।

प्र. 16 अलग-अलग पाँचों परमेष्ठियों के मूलगुण बताओ?

उ. श्री अरिहंत परमेष्ठी के 46, सिद्ध परमेष्ठी के 8, आचार्य परमेष्ठी के 36, उपाध्याय परमेष्ठी के 25 एवं साधु परमेष्ठी के 28 मूलगुण होते हैं।

प्र. 17 पाँचों परमेष्ठियों में सबसे बड़े परमेष्ठी कौन हैं?

उ. पाँचों परमेष्ठियों में आठों कर्मों का नाश कर मोक्ष में स्थित होने से श्री सिद्ध परमेष्ठी बड़े परमेष्ठी हैं, किन्तु संसार समुद्र में फँसे जीवों के हित के लिये मोक्षमार्ग का उपदेश दाता होने से श्री अरिहंत परमेष्ठी सबसे बड़े हैं।

प्र. 18 श्री अरिहंत परमेष्ठी को प्रथम नमस्कार क्यों किया गया है?

उ. क्योंकि श्री अरिहंत परमेष्ठी हम सभी को कल्याण मार्ग का उपदेश देते हैं।

- प्र. 19 पाँच परमेष्ठी कब से हैं और कब तक रहेंगे?
 उ. पाँच परमेष्ठी अनादि काल से हैं और अनन्त काल तक रहेंगे।
- प्र. 20 णमोकार मंत्र का माहात्म्य समझाओ?
 उ. ऐसो पंच णमोकारो, सव्व पावप्पणासणो।
 मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं॥
 अर्थात् यह पंच नमस्कार मंत्र सभी पापों को नष्ट करने वाला है एवं सर्व मंगलों में पहला मंगल है।
- प्र. 21 णमोकार मंत्र के माहात्म्य से किसको क्या फल मिला?
 उ. णमोकार मंत्र के माहात्म्य से कुत्ता, मेंढक, नाग-नागिन आदि तिर्यच जीवों को देव गति प्राप्त हुई।
- प्र. 22 णमोकार मंत्र के अपमान से किसको क्या फल मिला?
 उ. णमोकार मंत्र के अपमान से सुभौम चक्रवर्ती को नरक गति प्राप्त हुई।
- प्र. 23 उक्त दृष्टान्त से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
 उ. णमोकार मंत्र को हमेशा जपना चाहिए किन्तु कभी भी यत्र-तत्र, जमीन, दीवार, खराब कागज आदि पर नहीं लिखना चाहिए। यदि कहीं लिखा भी हो तो उस पर पैर आदि नहीं रखना चाहिए।
- प्र. 24 णमोकार मंत्र के पर्यायवाची नाम बताओ?
 उ. पंच परमेष्ठी मंत्र, अनादि मूल मंत्र, अनादि निधन मंत्र, अपराजित मंत्र, नमस्कार मंत्र, मूल मंत्र, मन्त्रराज मंत्र आदि।
- प्र. 25 पंचम काल में कितने परमेष्ठी हो सकते हैं?
 उ. तीन परमेष्ठी - 1. आचार्य, 2. उपाध्याय, 3. साधु।
- प्र. 26 पंचम काल में क्या सच्चे भावलिंगी मुनि हो सकते हैं?
 उ. हाँ, पंचम काल के अन्त तक सच्चे भावलिंगी मुनि होते रहेंगे।

णमोकार

सबसे अच्छी मेरी कार,
 ले जाती है भव से पार।
 पंच परमेष्ठी को नमोस्तु,
 कहती है यह बारंबार।
 बोलो वह कौनसी कार,
 वो है महामंत्र णमोकार॥

णमोकार के नाम

णमोकार के नाम अनेक,

पंच परमेष्ठी मंत्र है एक।

अनादि मूल मंत्र कहलाता,
 अनादि निधन मंत्र है भाता।
 है अपराजित मंत्र यही,
 नमस्कार यह मंत्र सही।
 मूल मंत्र को पढ़ते हैं,
 मन्त्रराज भी कहते हैं॥

मान करो - अपमान नहीं
 मान करो सम्मान करो,

णमोकार का ध्यान करो।
 नाग-नागिन स्वर्ग गये,
 सबके पूरे कार्य हुये।
 सुभौम ने लिखकर मिटा दिया,
 उसका फल वो नरक गया।
 इसीलिए बच्चों तुम सुन लो,
 कभी नहीं अपमान करो।
 णमोकार का ध्यान करो॥

परमेष्ठी

पाँच हमारे परमेष्ठी,
 पहले हैं अरिहंत जी।
 दूसरे हैं सिद्ध जी,
 तीसरे हैं आचार्य जी।
 चौथे उपाध्याय जी,
 पाँचवें हैं साधु जी।
 हम सब इनको ध्याते हैं,
 णमोकार में गाते हैं।
 मिलकर शीश झुकाते हैं,
 पाप कर्म नशाते हैं॥

परमेष्ठियों का स्वरूप

चार घातिया कर्म नाशे,
 वे अरिहंत प्रभु हमारे।
 आठ कर्म का नाश किया तो,
 सिद्ध प्रभु हैं मोक्ष पधारे।
 शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित्त देते,
 आचार्य उनको हम हैं कहते।
 पढ़ते और पढ़ाते हैं,
 उपाध्याय कहलाते हैं।
 ज्ञान-ध्यान-तप करते रहते,
 ऐसे साधु भव से तिरते॥

अक्षर-मात्रा

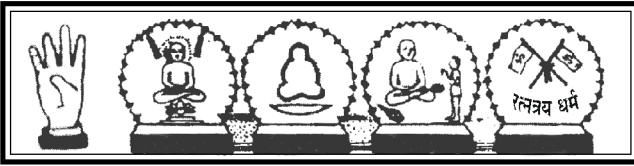
णमोकार में अक्षर मात्रा,
 चलो करायें इसकी यात्रा।
 सात, पाँच, सात, सात और नौ,
 प्रत्येक पद के अक्षर लो।
 ग्यारह, नौ, ग्यारह, बारह,
 पन्द्रह मात्रा भी गिन लो॥

अभ्यास प्रश्न

1. परमेष्ठी की परिभाषा लिखते हुए उनके नाम गिनाओ?
2. णमोकार मंत्र का लक्षण क्या है और वह कब से है?
3. अरिहंत और सिद्ध में बड़े परमेष्ठी कौन हैं?
4. तीसरे परमेष्ठी का लक्षण लिखो?
5. णमोकार मंत्र का दूसरा पद सुनाओ?
6. 'णमो अरिहंताणं' के अक्षर तथा 'णमो सिद्धाणं' की मात्राएँ गिनाओ?
7. णमोकार मंत्र के अपमान से किसको क्या फल मिला, कहानी लिखो?
8. इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

* * *

मंगल



- प्र. 1 मंगल किसे कहते हैं?
- उ. जो पापों को नष्ट कर उत्कृष्ट सुखों को प्राप्त कराये उसे मंगल कहते हैं।
- प्र. 2 विश्व में मंगल कितने हैं?
- उ. विश्व में मुख्य चार मंगल हैं।
- प्र. 3 चारों मंगलों के अर्थ सहित नाम बताओ?
- उ. चत्तारि मंगलं - मंगल चार होते हैं।
अरहन्ता मंगलं - अरहन्त भगवान् मंगल हैं।
सिद्धा मंगलं - सिद्ध भगवान् मंगल हैं।
साहू मंगलं - साधु परमेश्वरी मंगल हैं।
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं-केवली प्रणीत धर्म मंगल है।
- प्र. 4 आचार्य और उपाध्याय का मंगलों में पृथक्-पृथक् उल्लेख क्यों नहीं किया?
- उ. आचार्य और उपाध्याय का साधु मंगल में समावेश होने के कारण उनका पृथक्-पृथक् उल्लेख नहीं किया। वे भी साधु मंगल हैं।
- प्र. 5 उत्तम शब्द का अर्थ बताओ?
- उ. जो लोक में सर्वश्रेष्ठ है अर्थात् जिससे श्रेष्ठ अन्य वस्तु न हो, उसे उत्तम कहते हैं।

- प्र. 6 उत्तम कितने हैं?
उ. लोक में उत्तम चार हैं।
- प्र. 7 उत्तमों का अर्थ सहित नाम बताओ?
उ. चत्तारि लोगुत्तमा - लोक में चार उत्तम हैं।
अरहंता लोगुत्तमा - लोक में अरहंत भगवान उत्तम हैं।
सिद्धा लोगुत्तमा - लोक में सिद्ध भगवान उत्तम हैं।
साधू लोगुत्तमा - लोक में साधु परमेष्ठी उत्तम हैं।
केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा-केवली प्रणीत धर्म उत्तम है।
- प्र. 8 आचार्य और उपाध्याय क्या लोक में उत्तम नहीं हैं?
उ. आचार्य और उपाध्याय भी लोक में उत्तम हैं, उनकी गिनती साधु में ही हो जाती है।
- प्र. 9 शरण किसे कहते हैं?
उ. जिनका आश्रय लेने से आत्मा की पापों से रक्षा हो उसे शरण कहते हैं।
- प्र. 10 शरण कितनी होती हैं?
उ. लोक में शरण चार होती हैं।
- प्र. 11 शरणों के अर्थ सहित नाम गिनाओ?
उ. चत्तारि सरणं पव्वज्जामि - मैं चारों की शरण में जाता हूँ।
अरहंते सरणं पव्वज्जामि - अरिहंतों की शरण में जाता हूँ।
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि - मैं सिद्धों की शरण में जाता हूँ।
साधू सरणं पव्वज्जामि - मैं साधु की शरण में जाता हूँ।
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि- मैं केवली भगवान के द्वारा कहे हुए धर्म की शरण को प्राप्त होता हूँ।
- प्र. 12 आचार्य और उपाध्याय की गिनती किस शरण में की गई है?
उ. आचार्य और उपाध्याय की गिनती साधु शरण में की गई है।
- प्र. 13 चारों शरणों के सिवाय लोक में और कोई शरण है?
उ. नहीं, चारों शरणों के सिवाय लोक में और कोई शरण नहीं है।
- प्र. 14 क्या लोक में चार मंगलों से कम अथवा अधिक हुए हैं?
उ. नहीं, लोक में चार ही मंगल होते हैं, तथा हैं, भविष्य में भी ये रहेंगे, इनमें परिवर्तन नहीं हो सकता है।
- प्र. 15 क्या चारों उत्तमों की संख्या में परिवर्तन हो सकता है?
उ. नहीं, उत्तम चार ही हुए हैं, इससे आगे भी ये रहेंगे, इनमें परिवर्तन नहीं हो सकता है।

- प्र. 16 क्या पंचम काल में साधु लोक में उत्तम या शरणभूत हो सकते हैं?
 उ. हाँ, पंचमकाल में भी सच्चे दिगम्बर साधु लोक में उत्तम तथा शरणभूत हो सकते हैं।
- प्र. 17 चारों उत्तमों में मुनि महाराज कौन से उत्तम हैं?
 उ. मुनि महाराज चारों उत्तमों में साधू (साधु) उत्तम हैं।

मंगल

पापों को जो नष्ट करें, और उत्कृष्ट सुखों को दें,
 मंगल उनको कहते हैं, होते हैं बस चार ये।
 पहले अरिहंत मंगल, दूसरे हैं सिद्ध मंगल,
 तीसरे हैं साधु मंगल, चौथा जिनधर्म मंगल॥

उत्तम

लोक में जो सर्वश्रेष्ठ, जिससे कोई हो न श्रेष्ठ,
 उत्तम उसको कहते हैं, चार भेद ही होते हैं।
 पहले अरिहंत उत्तम, दूसरे हैं सिद्ध उत्तम,
 तीसरे हैं साधु उत्तम, चौथा जिनधर्म उत्तम॥

शरण

पापों से जो हमें बचाये, शरण वही कहलाती है,
 चार प्रकार हैं इसके भैया, जिनवाणी बतलाती है।
 पहली शरण अरिहंत प्रभु की, दूसरी प्रभु सिद्ध,
 तीसरी आचार्य की चौथी धर्म जिनेन्द्र प्रणीत॥

अभ्यास प्रश्न

1. मंगल का अर्थ लिखते हुए, उनके भेद बताओ?
2. चारों उत्तमों में आचार्य और उपाध्याय कौन से उत्तम हैं, नाम बताओ?
3. क्या कभी चार शरणों को छोड़ अन्य कोई शरण हो सकता है।
4. 'केवलपण्णत्तो धम्मो', शब्दों का अर्थ लिखो?
5. पंचम काल में कितनी शरण हो सकती हैं?
6. क्या पंचमकाल में साधु उत्तम हो सकते हैं?
7. चारों मंगलों में से मुनि महाराज कौन से मंगल हैं, नाम बताओ?
8. शरण शब्द की परिभाषा लिखते हुए, उनके नाम बताओ?
9. आपत्ति आने पर किसकी शरण में जाना चाहिए?

* * *

तीर्थङ्कर



- प्र. 1 तीर्थङ्कर किन्हें कहते हैं?
- उ. जो धर्म तीर्थ को चलाते हैं उन्हें तीर्थङ्कर कहते हैं।
- प्र. 2 धर्म किसे कहते हैं?
- उ. जिसके द्वारा प्राणी संसार के दुःखों से छूटकर उत्तम सुख को प्राप्त करे, उसे धर्म कहते हैं। अथवा वस्तु के वास्तविक स्वरूप (स्वभाव) को धर्म कहते हैं।
- प्र. 3 तीर्थ किसे कहते हैं?
- उ. जिससे संसार समुद्र तिरा (पार किया) जाए उसे तीर्थ कहते हैं।
- प्र. 4 धर्म तीर्थ किसे कहते हैं?
- उ. जो वस्तु के वास्तविक रूप का वर्णन करे तथा संसार समुद्र से पार करा सके वही सच्चा धर्म कहलाता है।
- प्र. 5 तीर्थङ्कर कितने होते हैं?
- उ. तीर्थङ्कर चौबीस होते हैं।
- प्र. 6 तीर्थङ्कर क्या सदा चौबीस होते हैं?
- उ. हाँ, भरत क्षेत्र एवं ऐरावत क्षेत्र में तीर्थङ्कर चौबीस ही होते हैं।
- प्र. 7 क्या तीर्थङ्कर चौबीस से कम या अधिक हुए हैं अथवा हो सकते हैं?

- उ. नहीं, तीर्थङ्कर भूतकाल में चौबीस ही हुए हैं, वर्तमान काल में भी चौबीस हैं और भविष्य में भी चौबीस ही होंगे, कम या अधिक नहीं।
- प्र. 8 **क्या सभी जगह चौबीस तीर्थङ्कर होते हैं?**
- उ. नहीं, मात्र पाँच भरत और पाँच ऐरावत क्षेत्रों में ही चौबीस तीर्थङ्कर होते हैं।
- प्र. 9 **फिर ऐसी कौन सी जगह है जहाँ कम-अधिक तीर्थङ्कर होते हैं?**
- उ. चौबीस से अधिक कहीं भी नहीं होते, किन्तु विदेह क्षेत्र में कम जरूर होते हैं।
- प्र. 10 **विदेह क्षेत्र में कितने तीर्थङ्कर होते हैं?**
- उ. विदेह क्षेत्र में सदा बीस तीर्थङ्कर विद्यमान रहते हैं।
- प्र. 11 **विद्यमान किसलिए कहा गया है?**
- उ. क्योंकि क्षेत्र में सदा मौजूद रहते हैं इससे कभी कम नहीं हो सकते इसलिए विद्यमान का अर्थ मौजूद है।
- प्र. 12 **एक साथ अधिक-से-अधिक कुल कितने तीर्थङ्कर हो सकते हैं?**
- उ. एक साथ अधिक-से-अधिक कुल एक सौ सत्तर तीर्थङ्कर हो सकते हैं।
- प्र. 13 **एक काल में अधिक-से-अधिक 170 तीर्थङ्कर कैसे हो सकते हैं?**
- उ. एक विदेह क्षेत्र संबंधी बत्तीस-बत्तीस उपविदेह हैं, अतः पाँचों विदेह क्षेत्र संबंधी उपविदेहों का योग एक सौ साठ हुआ। इस प्रकार प्रत्येक उपविदेह में एक-एक तीर्थङ्कर होने से 160 होते हैं और पाँच भरत और ऐरावत क्षेत्रों के 5-5 इन सबको जोड़ने पर एक सौ सत्तर तीर्थङ्कर हुए।
- प्र. 14 **तीर्थङ्कर की पहचान कैसे होती है?**
- उ. तीर्थङ्कर की पहचान चिन्हों से होती है।
- प्र. 15 **चिन्हों को कौन रखता है ?**
- चिन्हों को कोई नहीं रखता है, अपितु तीर्थङ्कर के शरीर में एक हजार आठ शुभ लक्षणों में से एक होता है।
- प्र. 16 **तो यह निर्णय कैसे किया जाता है कि अमुक तीर्थङ्कर का अमुक चिह्न है?**
- उ. क्योंकि शरीर में चिह्न का स्थान नियत है, वहाँ जो चिह्न हो वही उक्त तीर्थङ्कर का चिह्न माना जाता है।
- प्र. 17 **चिह्न कौन से स्थान पर होता है?**
- उ. चिह्न तीर्थङ्कर के दाहिने पैर के अँगूठे में होता है।

प्र. 18 चिह्न कौन देखता है?

उ. चिह्न सौधर्म इन्द्र देखता है।

प्र. 19 सौधर्म इन्द्र चिह्न को कब देखता है?

उ. जब तीर्थङ्कर बालक का सुमेरु पर्वत पर जन्माभिषेक होता है, उस समय सौधर्म इन्द्र उनके दाहिने पैर के अँगूठे में स्थित चिह्न को देखता है।

प्र. 20 जो तीर्थङ्कर पूर्व अवस्था में थे क्या वही चिह्न रखा जाता है?

उ. नहीं, क्योंकि एक हजार लक्षणों में एक शुभ लक्षण है तथा दूसरी बात यह है कि यदि जो तीर्थङ्कर पूर्व अवस्था में थे, वही चिह्न है ऐसा कहोगे तो सुपार्श्वनाथ, धर्मनाथ, मल्लिनाथ आदि तीर्थङ्कर अचेतन सिद्ध होंगे और ऐसा मानने पर सर्व लोप का प्रसंग आयेगा, वस्तु व्यवस्था नहीं रह सकेगी।

प्र. 21 चौबीस तीर्थङ्करों के नाम चिह्न सहित बताओ?

उ. चौबीस तीर्थङ्करों के नाम एवं चिह्न निम्नलिखित हैं-

तीर्थकर नाम	चिह्न	तीर्थकर नाम	चिह्न
1. श्री ऋषभनाथ	बैल	2. श्री अजितनाथ	हाथी
3. श्री संभवनाथ	घोड़ा	4. श्री अभिनंदननाथ	बंदर
5. श्री सुमतिनाथ	चकवा	6. श्री पद्मप्रभ	श्वेत कमल
7. श्री सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	8. श्री चन्द्रप्रभ	चन्द्रमा
9. श्री पुष्पदंत	मगर	10. श्री शीतलनाथ	कल्पवृक्ष
11. श्री श्रेयांसनाथ	गैंडा	12. श्री वासुपूज्य	भैंसा
13. श्री विमलनाथ	सूकर	14. श्री अनंतनाथ	सेही
15. श्री धर्मनाथ	वज्रदंड	16. श्री शांतिनाथ	हिरण
17. श्री कुंथुनाथ	बकरा	18. श्री अरहनाथ	मछली
19. श्री मल्लिनाथ	कलश	20. श्री मुनिसुव्रत	कछुआ
21. श्री नमिनाथ	नीलकमल	22. श्री नेमिनाथ	शंख
23. श्री पार्श्वनाथ	सर्प	24. श्री महावीर	सिंह

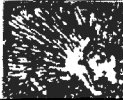
प्र. 22 बाहुबली भगवान कौन से तीर्थङ्कर हैं?

उ. बाहुबली भगवान तीर्थङ्कर नहीं हैं, किन्तु केवली भगवान हैं।

प्र. 23 एक से अधिक नाम वाले तीर्थङ्कर कितने हैं, नाम बताओ?

उ. एक से अधिक नाम वाले तीर्थङ्कर हैं-

1. श्री ऋषभनाथजी 2. श्री पुष्पदन्तजी 3. भगवान महावीर स्वामी

			
बैल	हाथी	घोड़ा	बन्दर
			
चकवा	कमल	स्वास्तिक	चन्द्रमा
			
मगर	कल्पवृक्ष	गैंडा	भैंसा
			
शूकर	सेही	वज्र दण्ड	हिरण
			
बकरा	मछली	कलश	कछुआ
			
नीलकमल	शंख	सर्प	सिंह

प्र. 24 कौन-कौन से तीर्थङ्कर के एक से अधिक नाम हैं तथा क्या-क्या हैं, बताओ?

उ. (1) श्री ऋषभनाथ जी के अन्य नाम आदिनाथ, वृषभनाथ हैं।

(2) पुष्पदन्तजी का दूसरा नाम सुविधिनाथ जी है।

(3) महावीर स्वामी के पाँच नाम हैं-

1. वीर 2. अतिवीर 3. सन्मति 4. वर्द्धमान 5. महावीर।

प्र. 25 कौन-कौन से तीर्थङ्करों के शरीर का वर्ण कैसा है, नाम सहित बताओ?

- उ. पद्मप्रभ जी एवं वासुपूज्य जी का - लाल।
सुपार्श्वनाथ जी एवं पार्श्वनाथ जी का - हरा।
चन्द्रप्रभ जी एवं पुष्पदन्त जी का - सफेद (शुक्ल)।
मुनिसुव्रतनाथ जी एवं नेमिनाथ जी का - काला (श्याम)
शेष सभी तीर्थङ्करों के शरीर का रंग तपाये हुए स्वर्ण जैसा है।

प्र. 26 बाल ब्रह्मचारी किसे कहते हैं?

- उ. जो स्वेच्छा से विवाह नहीं करते तथा आजन्म स्त्री विषयक सुखों से दूर रहते हैं उन्हें बाल ब्रह्मचारी कहते हैं।

प्र. 27 बाल ब्रह्मचारी कितने तीर्थङ्कर हुए, नाम बताओ?

- उ. पाँच तीर्थङ्कर बाल ब्रह्मचारी हुए हैं-
1. श्री वासुपूज्य जी 2. श्री मल्लिनाथ जी
3. श्री नेमिनाथ जी 4. श्री पार्श्वनाथ जी
5. श्री महावीरस्वामी जी। इन्हें पंच बालयति भी कहते हैं।

प्र. 28 एक से अधिक पद के धारी कितने तीर्थङ्कर हुए, नाम बताओ?

- उ. तीन तीर्थङ्कर- श्री शान्तिनाथ जी, श्री कुन्थुनाथ जी, श्री अरहनाथ जी एक से अधिक पद के धारी हुए हैं।

प्र. 29 वे कौन से और कितने पद हैं जिनके स्वामी श्री शान्तिनाथजी, श्री कुन्थुनाथ जी एवं श्री अरहनाथ जी हुए हैं?

- उ. श्री शान्तिनाथ जी, श्री कुन्थुनाथ जी, श्री अरहनाथ जी तीन पद के धारी हुए हैं-
1. तीर्थङ्कर, 2. चक्रवर्ती, 3. कामदेव।

प्र. 30 चक्रवर्ती किसे कहते हैं?

- उ. चक्रवर्ती समस्त राजाओं का राजा होता है अर्थात् जिससे बढ़कर और कोई दूसरा राजा न हो, जो छः खण्डों का अधिपति हो, उसे चक्रवर्ती कहते हैं।

प्र. 31 कामदेव किसे कहते हैं?

- उ. जिनका रूप सबसे सुन्दर होता है अर्थात् जिनके रूप को देखकर हर व्यक्ति मोहित हो जाए उसे कामदेव कहते हैं।

प्र. 32 क्या हम भी तीर्थङ्कर बन सकते हैं?

- उ. हाँ, हम भी तीर्थङ्कर बन सकते हैं।

प्र. 33 हमें तीर्थङ्कर बनने के लिए क्या करना चाहिए?

- उ. हमें तीर्थङ्कर बनने के लिए विशुद्ध हृदय से सोलह कारण भावनाओं का चिन्तन करना चाहिए।

प्र. 34 सोलह कारण भावनाओं का क्या अर्थ है?

उ. ये भावनाएँ तीर्थङ्कर बनने में कारण हैं, इसलिए इन्हें सोलह कारण (षोडश) भावना कहते हैं।

प्र. 35 तीर्थङ्कर प्रकृति की कारणभूत सोलह भावनाओं के नाम बताओ?

उ.	1. दर्शन विशुद्धि	2. विनय सम्पन्नता
	3. अनतिचार शीलव्रत	4. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग
	5. संवेग	6. शक्ति: त्याग
	7. शक्ति: तप	8. साधु समाधि
	9. वैय्यावृत्ति	10. अर्हद् भक्ति
	11. आचार्य भक्ति	12. बहुश्रुत (उपाध्याय) भक्ति
	13. प्रवचन भक्ति	14. आवश्यकापरिहाणि
	15. मार्ग प्रभावना	16. प्रवचन वत्सलत्व

प्र. 36 भरत क्षेत्र संबंधी भूतकालीन तीर्थङ्करों के नाम बताओ?

उ.	1. निर्वाण	2. सागर	3. महासाधु	4. विमलप्रभ
	5. शुद्धाभदेव	6. श्रीधर	7. श्रीदत्त	8. सिद्धाभ (सुदत्त)
	9. अमलप्रभ	10. उद्धारजिन	11. अङ्गिर	12. संयमप्रभ
	13. शिवगण	14. कुसुमांजलि	15. उत्साह	16. परमेश्वर
	17. ज्ञानेश्वर	18. विमलेश्वर	19. यशोधर	20. कृष्णमति
	21. ज्ञानमति	22. शुद्धमति	23. श्रीभद्र	24. शान्त

प्र. 37 भरत क्षेत्रसंबंधी भविष्यकालीन तीर्थङ्करों के नाम बताओ?

उ.	1. महापद्म	2. सुरप्रभ	3. सुप्रभ	4. स्वयंप्रभ
	5. सर्वायुधदेव	6. जयदेव	7. उदयप्रभ	8. प्रभादेव
	9. उदंकदेव	10. प्रश्नकीर्ति	11. जयकीर्ति	12. पूर्णबुद्धि
	13. निःकाम्यक्षेत्र	14. विमलप्रभ	15. बहुलप्रभदेव	16. निर्मलजिन
	17. चित्रगुप्ति	18. समाधिगुप्ति	19. स्वयंभू	20. कंदर्प
	21. जयनाथ	22. विमलदेव	23. दिव्यवाद	24. अनंतवीर्य

प्र. 38 भरत क्षेत्र के तीर्थङ्करों की जन्म नगरी, माता-पिता के नाम एवं निर्वाण स्थान लिखो?

उ.

तीर्थंकर नाम	जन्मनगरी	पिता	माता	निर्वाण स्थान
1. श्री ऋषभनाथ	अयोध्या	नाभिराज	मरुदेवी	कैलाशपर्वत
2. श्री अजितनाथ	अयोध्या	जितशत्रु	विजया	सम्मदेदशिखर
3. श्री संभवनाथ	श्रावस्ती	जितारी	सुषेणा	सम्मदेदशिखर
4. श्री अभिनंदननाथ	अयोध्या	संवर	सिद्धार्था	सम्मदेदशिखर
5. श्री सुमतिनाथ	अयोध्या	मेघरथ	मंगला	सम्मदेदशिखर
6. श्री पद्मप्रभ	कौशाम्बी	धरण	सुसीमा	सम्मदेदशिखर
7. श्री सुपार्श्वनाथ	बनारस	सुप्रतिष्ठित	पृथ्वीसेना	सम्मदेदशिखर
8. श्री चन्द्रप्रभ	चन्द्रपुरी	महासेन	लक्ष्मणा	सम्मदेदशिखर
9. श्री पुष्पदंत	काकन्दी	सुग्रीव	रामा	सम्मदेदशिखर
10. श्री शीतलनाथ	भदलपुर	दृढरथ	सुनन्दा	सम्मदेदशिखर
11. श्री श्रेयांसनाथ	सिंहपुरी	विष्णु	विष्णुश्री	सम्मदेदशिखर
12. श्री वासुपूज्य	चंपापुर	वासुपूज्य	जयावती	चंपापुर
13. श्री विमलनाथ	कंपिला	कृतवर्मा	जयश्यामा	सम्मदेदशिखर
14. श्री अनंतनाथ	अयोध्या	सिंहसेन	सर्वयशा	सम्मदेदशिखर
15. श्री धर्मनाथ	रत्नपुरी	भानु	सुव्रता	सम्मदेदशिखर
16. श्री शांतिनाथ	हस्तिनापुर	विश्वसेन	एरा	सम्मदेदशिखर
17. श्री कुंथुनाथ	हस्तिनापुर	शूरसेन	श्रीमती	सम्मदेदशिखर
18. श्री अरहनाथ	हस्तिनापुर	सुदर्शन	मित्रसेना	सम्मदेदशिखर
19. श्री मल्लिनाथ	मिथिला	कुम्भ	प्रभावती	सम्मदेदशिखर
20. श्री मुनिसुव्रत	राजगृही	सुमित्र	पद्मावती	सम्मदेदशिखर
21. श्री नमिनाथ	मिथिला	श्रीविजय	वप्पिला	सम्मदेदशिखर
22. श्री नेमिनाथ	शौरीपुर	समुद्रविजय	शिवादेवी	गिरनारजी
23. श्री पार्श्वनाथ	बनारस	अश्वसेन	वामादेवी	सम्मदेदशिखर
24. श्री महावीर	कुण्डलपुर	सिद्धार्थ	त्रिशला	पावापुरी

प्र. 39 भूतकाल किसे कहते हैं?

उ. जो काल व्यतीत हो चुका हो उसे भूतकाल कहते हैं।

प्र. 40 भविष्यकाल किसे कहते हैं?

उ. आने वाले काल को भविष्यकाल कहते हैं।

प्र. 41 विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थङ्करों के नाम बताओ?

उ.	1. श्रीसीमंधरजी	2. युगमंधर	3. बाहु	4. सुबाहु
	5. संजातक	6. स्वयंप्रभ	7. वृषभानन	8. अनन्तवीर्य
	9. सूरिप्रभ	10. विशालकीर्ति	11. वज्रधर	12. चन्द्रानन
	13. चन्द्रबाहु	14. ईश्वर	15. नेमीश्वर	16. वीरसेन
	17. महाभद्र	18. भुजङ्गम	19. देवयश	
	20. अजितवीर्यजी			

चौबीस भगवानों के नाम व चिह्न

चौबीसों भगवान के, चौबीस चिह्न सुनाओ ना,
हम बोलें और तुम भी बोलो, आओ मिलकर गाओ ना।
ऋषभनाथ के बैल विराजे, अजितनाथ के हाथी,
संभव जिन के घोड़ा शोभे, अभिनन्दन के बन्दर जी।
सुमतिनाथ का चकवा है, पद्मप्रभ का लाल कमल,
सुपाश्वनाथ का बना साथिया, चन्द्रप्रभ का चन्द्र अमल।
पुष्पदन्त का चिह्न मगर है, शीतल का कल्प वृक्ष कहो,
श्रेयांसनाथ का गैंडा देखो, वासुपूज्य का भैंसा लो।
विमल चिह्न शूकर कहलाया, अनन्तनाथ का सेही आया,
धर्मनाथ का वज्रदण्ड है, शान्तिनाथ का हिरण बताया।
कुन्थनाथ का बकरा चिह्न, अरहनाथ का चिह्न मीन,
मल्लिनाथ कलशा से शोभे, सुव्रत का कछुआ मन मोहे।
नमि का नील कमल खिल जाए, नेमिनाथ का शंख बजे,
पार्श्वनाथ का सर्प विराजे, महावीर का सिंह सजे॥

अभ्यास प्रश्न

1. तीर्थंकर शब्द की परिभाषा लिखते हुए अठारहवें तीर्थङ्कर का नाम बताओ?
2. तीर्थंकरों की पहचान कैसे होती है तथा किस तीर्थङ्कर की क्या पहचान है?
3. रिक्त स्थान भरो-

- (अ) छठवें तीर्थकर का नाम है।
 (ब) उन्नीसवें तीर्थकर का चिन्ह है।
 (स) अनंतनाथ भगवान वें तीर्थकर हैं।
 (द) सुपार्श्वनाथ के शरीर का वर्ण है।
 (इ) शंख तीर्थकर का चिह्न है।
4. तीन पद के धारी कौन-कौन से तीर्थकर हुए, लिखो?
 5. बाल ब्रह्मचारी किसे कहते हैं तथा कितने तीर्थकर बाल ब्रह्मचारी हैं, नाम बताओ?
 6. क्या चौबीस से अधिक तीर्थकर हो सकते हैं?

* * *

श्री 1008 महावीर स्वामी



चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म आज (सन् 2015) से लगभग 2615 वर्ष पूर्व कुण्डलपुर में हुआ था। इनके पिता महाराज सिद्धार्थ, बड़े ही नीतिवान व धर्मपरायण राजा थे। माता त्रिशला भी बड़ी शीलवती एवं धर्मवत्सला थी। इनकी ही पावन कुक्षी से चैत्र सुदी तेरस को बालक महावीर का जन्म हुआ था। इनके जन्मोत्सव हेतु स्वर्ग से अनेक देव आए थे। वे सभी सर्वप्रथम बालक को ऐरावत हाथी पर बैठाकर सुदर्शन मेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर ले गए। वहाँ पर सभी ने धूमधाम से नव प्रसूत बालक का जन्माभिषेक किया, तदनंतर सौधर्म इन्द्र ने उनके दाहिने पैर के अँगूठे पर स्थित चिह्न देखकर उनका नाम वर्द्धमान रखा। उसी समय वर्द्धमान की जय जयकार से सारा भूमण्डल गूँज गया। तदनंतर सभी ने राजमहल के प्रांगण में आकर जन्मोत्सव मनाया, इन्द्र ने ताण्डव नृत्य एवं आनन्द नामक नाटक किया। बालक की देवोपनीत सर्व व्यवस्था कर सभी जन अपने-अपने स्थान को चले गये। बालक वर्द्धमान धीरे-धीरे वृद्धि को प्राप्त हुए। एक दिन जब आप पालने में झूल रहे थे, उस समय दो चारण ऋद्धिधारी मुनिराज वहाँ से गुजरे। उनके मन में कुछ शंका थी, किन्तु आपको देखते

ही उसका समाधान हो गया। यह विशेषता देख उन मुनिराजों ने बालक वर्धमान की भूरि-भूरि प्रशंसा की और सन्मति नाम से पुकारा, तभी से आपका नाम सन्मति भी पड़ा। इसी प्रकार से आपकी पृथक्-पृथक् घटना विशेषों पर, वीर, अतिवीर, महावीर आदि नाम पड़े।

आप बाल ब्रह्मचारी ही रहे अर्थात् आपने शादी नहीं की। आपके शरीर का रंग तपे हुए स्वर्ण के समान था और शरीर की ऊँचाई सात हाथ थी। कुल आयु 72 वर्ष थी। आपने तीस वर्ष की अल्पायु में ही नग्न दिगम्बर दीक्षा ले ली और सर्व परिग्रह का त्याग कर दुर्द्धर कठोर साधना करने लगे। आप जंगलों में ही रहते थे। आहार के लिए दिन में एक ही बार निकलते थे और श्रावकों के यहाँ अपने करपात्र में ही शुद्ध आहार लेते थे। बारह वर्षों की कठोर तपस्या के बाद एक दिन आपको केवलज्ञान हो गया, जिससे आपको लोक-अलोक के सभी पदार्थ एक साथ ही प्रत्यक्ष दिखने लगे। उस समय इन्द्र की आज्ञा से देवों ने मणिमयी समवशरण की रचना की और भगवान के लिए कृत्रिम कमलमय दिव्य आसन भी बनाया। भगवान उस आसन से चार अँगुल ऊपर अधर में ही विराजे रहते थे। उनके चारों ओर बारह सभाओं की रचना हुई। उसमें क्रमानुसार सभी मुनि, आर्यिका, देव, मनुष्य, तिर्यच आदि बैठे। छयासठ दिन बाद भगवान महावीर स्वामी की दिव्यध्वनि खिरी अर्थात् धर्मोपदेश हुआ। भगवान महावीर स्वामी के प्रमुख गणधर गौतम स्वामी हुए। इस प्रकार भगवान महावीर स्वामी का केवली अवस्था में देश-देश में धर्मोपदेश हुआ। तदनंतर आप पावापुर के मानसरोवर के मध्य स्थित शिला पर ध्यानमग्न हो गये और आपने चौदह दिन की कठोर तपस्या से समस्त कर्मों को नष्ट कर कार्तिक कृष्ण अमावस्या की प्रातःकालीन बेल में मोक्ष को प्राप्त कर लिया अर्थात् सिद्ध हो गये। (उसी दिन शाम को गौतम गणधर को केवलज्ञान हुआ। इसी खुशी में घर-घर दीप जलाये गये। उसी दिन से वह दिन दीपावली के नाम से प्रसिद्ध हुआ।)

भगवान महावीर

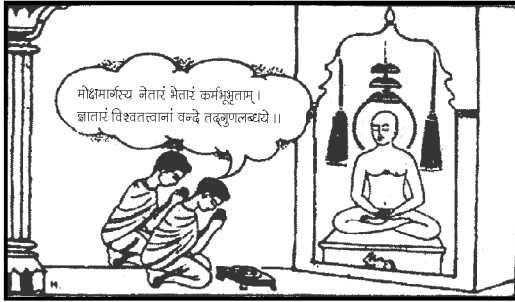
सिद्धार्थ पिता, माँ त्रिशला के घर, तीस वर्ष में दीक्षा ली,
कुण्डलपुर में जन्मे प्रभुवर, शादी बर्बादी न की।
श्री अतिवीर, सन्मति, वर्धमान, ब्यालीस वर्ष में केवलज्ञान,
वीर, महावीर, पाँच ये नाम, बहत्तर में गये निर्वाण।
सात हाथ तन की ऊँचाई, सोने जैसी सूरत भाई,
पावापुर से मोक्ष पधारे, हम सब जय महावीर पुकारें॥

अभ्यास प्रश्न

1. श्री महावीर स्वामी कौन थे, इनका जन्म कब और कहाँ हुआ बताओ?
2. श्री महावीर स्वामी का चिह्न बतलाते हुए उनके सभी नाम बताओ?
3. श्री महावीर स्वामी ने विवाह किया था या नहीं?
4. चौबीसवें तीर्थङ्कर की आयु क्या थी तथा शरीर का वर्ण कैसा था?
5. श्री महावीर स्वामी का जीवन परिचय संक्षेप में लिखो?
6. दीपावली किस कारण से प्रसिद्ध है?
7. गौतम गणधर को केवलज्ञान किस दिन हुआ?

* * *

देव दर्शन स्तुति



प्र. 1 देवदर्शन स्तुति के रचयिता कौन हैं?

उ. देवदर्शन स्तुति के रचयिता कविवर श्री बुधजन हैं।

प्र. 2 शुद्ध उच्चारण करते हुए देवदर्शन स्तुति लिखो?

उ. देवदर्शन स्तुति-

प्रभु पतित पावन मैं अपावन, चरन आयो शरण जी।

यों विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन-मरण जी॥1॥

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।

या बुद्धि सेती निज ना जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी॥2॥

भव विकट वन में कर्म बैरी, ज्ञान-धन मेरो हर्यो।

तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट-गति धरतो फिर्यो॥3॥

धन घड़ी यों धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो।

अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो॥4॥

छवि वीतरागी नग्न-मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरे।

वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरेँ॥5॥

मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।

मो उर हर्ष ऐसो भयो, मनु रङ्क चिंतामणि लयो॥6॥

मैं हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, वीनऊँ तुम चरणजी।

सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहुँ तारण-तरण जी॥7॥

जाचूँ नहीं सुरवास पुनि, नर-राज परिजन साथ जी।

‘बुध’ जाँचहुँ तुम भक्ति भव-भव, दीजिये शिवनाथ जी॥8॥

प्र. 3 देव दर्शन स्तुति किसे कहते हैं?

उ. जिस स्तुति के द्वारा जिनेन्द्र भगवान के गुणगान के रूप में भक्ति की जाती है उसे देव दर्शन स्तुति कहते हैं।

प्र. 4 देव दर्शन स्तुति कब और कैसे बोलना चाहिए?

उ. भगवान के दर्शन करते समय देव दर्शन स्तुति बोलना चाहिए तथा जिनेन्द्र भगवान के सामने अपने दोनों पैरों में चार अंगुल का अंतर रखकर खड़े होकर अपने दोनों हाथों को जोड़कर आँखों को नाक के अग्रभाग में स्थिर कर अथवा आँखों को बन्द करके देव दर्शन स्तुति बोलना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

1. देव दर्शन स्तुति किसे कहते हैं?
2. देव दर्शन स्तुति कब बोलना चाहिए?
3. देव दर्शन स्तुति की शुद्ध आठ पंक्तियाँ लिखो?
4. देव दर्शन स्तुति कैसे बोलना चाहिए?
5. देव दर्शन स्तुति के रचयिता कौन हैं?
6. स्तुति के माध्यम से भगवान के समक्ष जो प्रार्थना की गई है उसका सार सुनाओ?



जीव : त्रस और स्थावर



प्र. 1 जीव किसे कहते हैं?

उ. जिसमें चेतना पायी जाती है उसे जीव कहते हैं। अथवा जो जीता था, जी रहा है तथा जीवेगा उसे जीव कहते हैं।

प्र. 2 चेतना किसे कहते हैं?

उ. जिसमें ज्ञान-दर्शन पाए जाते हैं उसे चेतना अर्थात् जीव कहते हैं।

प्र. 3 जीव कितने प्रकार के होते हैं?

उ. जीव दो प्रकार के होते हैं-

1. मुक्त 2. संसारी

प्र. 4 मुक्त जीव किसे कहते हैं?

उ. जो जीव कर्मों से पूर्णतः मुक्त अर्थात् छूट चुके हैं, उन्हें मुक्त जीव कहते हैं।

- प्र. 5 **मुक्त जीव कौन हैं?**
 उ. सभी सिद्ध भगवान मुक्त जीव हैं।
- प्र. 6 **मुक्त जीव कहाँ रहते हैं?**
 उ. लोक के अग्र भाग पर मुक्त जीव रहते हैं।
- प्र. 7 **वे कैसे रहते हैं?**
 उ. वे सभी सिद्ध परमात्मा ज्ञाता-दृष्टा रूप से रहते हैं।
- प्र. 8 **वे वहाँ क्या करते हैं?**
 उ. वे कुछ नहीं करते क्योंकि वे कृत-कृत्य हो चुके हैं, उन्हें जो कुछ करना था सो कर लिया, अब कुछ करना शेष नहीं है।
- प्र. 9 **अब वे (मुक्त जीव) संसार में कब आयेंगे?**
 उ. अब वे कभी संसार में लौटकर नहीं आयेंगे, हमेशा वहाँ ही रहेंगे।
- प्र. 10 **संसारी जीव किसे कहते हैं?**
 उ. जो चतुर्गति रूप संसार में परिभ्रमण करते हैं, कर्मों से सहित हैं, उन्हें संसारी जीव कहते हैं।
- प्र. 11 **जीव चतुर्गति रूप संसार परिभ्रमण में क्या करता है?**
 उ. संसारी जीव जगह-जगह अनेक प्रकार के दुःख ही प्राप्त करते हैं।
- प्र. 12 **संसारी जीव की क्या पहचान है?**
 उ. जो खाता है, पीता है, सोता है, चलता है, श्वांस लेता है तथा सुख दुःख का अनुभव करता है, इत्यादि कारणों से संसारी जीव की पहचान होती है।
- प्र. 13 **संसारी जीव के कितने भेद हैं तथा कौन-कौन से हैं?**
 उ. संसारी जीव के दो भेद हैं- त्रस, स्थावर।
- प्र. 14 **क्या संसार में मात्र दो प्रकार के जीव हैं?**
 उ. हाँ, दो ही प्रकारों में समस्त संसारी जीवों की गणना हो जाती है।
- प्र. 15 **त्रस जीव किसे कहते हैं?**
 उ. जिसमें दो इन्द्रिय से लेकर अधिक इन्द्रियाँ पायी जाती हैं उन्हें त्रस कहते हैं अथवा जो चलते हैं, बोलते हैं उन्हें त्रस कहते हैं, जैसे- मनुष्य, हाथी, घोड़ा, देव, नारकी आदि।
- प्र. 16 **त्रस जीव कितने प्रकार के होते हैं?**
 उ. त्रस जीव चार प्रकार के होते हैं-

प्र. 17 चारों प्रकार के त्रसों के नाम बताओ?

उ. 1. द्वि इन्द्रिय 2. त्रि इन्द्रिय 3. चतुरिन्द्रिय 4. पंचेन्द्रिय

प्र. 18 द्वि इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उ. जिनमें मात्र स्पर्शन और रसना ये दो इन्द्रियाँ पायी जाती हैं उन्हें द्वि इन्द्रिय जीव कहते हैं, जैसे - लट, केंचुआ, शंख आदि।

प्र. 19 त्रि-इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उ. जिनमें स्पर्शन, रसना और घ्राण ये तीन इन्द्रियाँ पायी जाती हैं उन्हें त्रि इन्द्रिय जीव कहते हैं, जैसे - चींटी, खटमल, जूँ, बिच्छू आदि।

प्र. 20 चतुरिन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उ. जिनमें स्पर्शना, रसना, घ्राण तथा चक्षु ये चार इन्द्रियाँ पायी जाती हैं उन्हें चतुरिन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे- मक्खी, मच्छर, भौरा, पतंगा आदि।

प्र. 21 पंचेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उ. जिनमें स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु तथा कर्ण ये पाँच इन्द्रियाँ पायी जाती हैं उन्हें पंचेन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे- मनुष्य, नारकी, देव, घोड़ा, हाथी आदि।

प्र. 22 स्थावर जीव किसे कहते हैं?

उ. जिसके मात्र एक ही इन्द्रिय होती है उसे स्थावर कहते हैं।

प्र. 23 स्थावर के कितने भेद हैं?

उ. स्थावर के पाँच भेद हैं।

प्र. 24 पाँचों स्थावरों को अलग-अलग बताओ?

उ. पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक।

प्र. 25 पृथ्वीकायिक जीव किसे कहते हैं?

उ. पृथ्वी ही जिन जीवों का शरीर है उन्हें पृथ्वीकायिक जीव कहते हैं, अथवा जिन्हें पृथ्वी नामकर्म का उदय पाया जाये उन्हें पृथ्वीकायिक जीव कहते हैं, जैसे खदान में स्थित पत्थर।

प्र. 26 जलकायिक जीव किसे कहते हैं?

उ. जल ही जिन जीवों का शरीर है उन्हें जलकायिक जीव कहते हैं। अथवा जल नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को जलकायिक जीव कहते हैं, जैसे कुएँ, बावड़ी, नदी का जल आदि।

- प्र. 27 **अग्निकायिक जीव किसे कहते हैं?**
 उ. अग्नि ही जिन जीवों का शरीर है उन्हें अग्निकायिक जीव कहते हैं। अथवा अग्नि नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को अग्निकायिक जीव कहते हैं। जैसे चूल्हा, लालटेन, दीपक, अग्नि आदि।
- प्र. 28 **वायुकायिक जीव किसे कहते हैं?**
 उ. वायु ही जिन जीवों का शरीर है अथवा वायु नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को वायुकायिक जीव कहते हैं, जैसे हवा, आँधी, पंखा आदि की हवा।
- प्र. 29 **वनस्पतिकायिक जीव किसे कहते हैं?**
 उ. वनस्पति ही जिन जीवों का शरीर है अथवा वनस्पति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को वनस्पतिकायिक जीव कहते हैं, जैसे- पेड़, पौधे। इसके दो भेद हैं-
 1. प्रत्येक वनस्पति, 2. साधारण वनस्पति।
- प्र. 30 **प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीव किसे कहते हैं?**
 उ. एक शरीर का एक ही स्वामी जो जीव होता है उसे प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीव कहते हैं, जैसे आम, नारंगी, पपीता आदि।
- प्र. 31 **साधारण वनस्पतिकायिक जीव किसे कहते हैं?**
 उ. एक शरीर के अनेक स्वामी हों, उन्हें साधारण वनस्पतिकायिक जीव कहते हैं जैसे गुड़बेल।
- प्र. 32 **प्रत्येक वनस्पतिकायिक के कितने भेद हैं?**
 उ. प्रत्येक वनस्पतिकायिक के दो भेद हैं-
 1. सप्रतिष्ठित 2. अप्रतिष्ठित
- प्र. 33 **सप्रतिष्ठित वनस्पति किसे कहते हैं?**
 उ. जिस वनस्पति के आधार पर अनेक जीव रहें उसे सप्रतिष्ठित वनस्पति कहते हैं, जैसे- दूबा, पत्ते, फल आदि।
- प्र. 34 **अप्रतिष्ठित वनस्पति किसे कहते हैं?**
 उ. जिस वनस्पति के आधार से अन्य जीव नहीं रहते हैं उसे अप्रतिष्ठित वनस्पति कहते हैं, जैसे पके हुए फल, पके हुए पत्ते आदि।
- प्र. 35 **निगोदिया जीव किसे कहते हैं?**
 उ. जिन जीवों के आहार, श्वासोच्छ्वास, निद्रा, जन्म एवं मरण आदि एक साथ होते हैं तथा जिनका मरण श्वास के अठारहवें भाग में होता रहता है

उन्हें निगोदिया जीव कहते हैं।

प्र. 36 निगोदिया जीव एक श्वांस में कितनी बार जन्म-मरण करता है?

उ. निगोदिया जीव एक श्वांस में अठारह बार जन्म-मरण करता है।

प्र. 37 नित्य निगोदिया जीव किसे कहते हैं?

उ. जो अभी तक निगोद अवस्था से निकले नहीं अर्थात् जिन्होंने निगोद अवस्था के अतिरिक्त अन्य कोई दूसरी अवस्था पायी ही नहीं है उन्हें नित्य निगोदिया जीव कहते हैं।

प्र. 38 इतर निगोदिया जीव किसे कहते हैं?

उ. जिन जीवों ने निगोद अवस्था से निकलकर पुनः निगोद अवस्था प्राप्त की हो उन्हें इतर निगोदिया जीव कहते हैं।

जीव

जीव हूँ मैं जीव हूँ,
क्योंकि मुझमें चेतना।
संसारी और मुक्त मुझे,
दो प्रकार से देखना।
दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक,
संसारी हैं त्रस कहलाते।

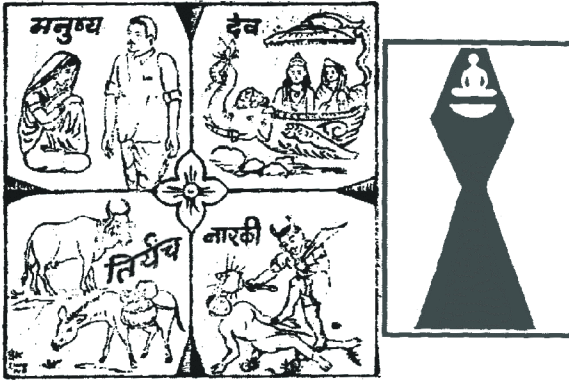
एकेन्द्रिय को कहें स्थावर,
बेचारे चल भी न पाते।
हम सब हैं संसारी जीव,
कर्मों से जो बँधे रहें।
मुक्त जीव हैं सिद्ध प्रभु,
सिद्ध शिला पर मौज करें॥

अभ्यास प्रश्न

1. जीव किसे कहते हैं?
2. संसारी जीव की पहचान बताते हुए लक्षण लिखो?
3. सही उत्तर दो-
(क) दो इन्द्रिय जीव.....है (चींटी, खटमल, कुँचआ)।
(ख) वृक्ष.....है (जीव, अजीव)।
(ग) मुक्त जीव.....है (अरिहंत, सिद्ध आचार्य)।
(घ) पानी.....है (जलकायिक, वनस्पतिकायिक, अग्निकायिक)।
(ङ) ऊँट.....इन्द्रिय जीव है (एकेन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, पंचेन्द्रिय)।
4. तुम जीव क्यों हो और पेन अजीव क्यों है? अन्तर समझाओ।
5. त्रस और स्थावर जीव की परिभाषा लिखो।
6. अग्निकायिक जीव किसे कहते हैं स्पष्ट करो?

* * *

चार गतियाँ



- प्र. 1 गति किसे कहते हैं?
- उ. संसार परिभ्रमण में कारणभूत एवं भव से भवान्तर (दूसरा भव) की प्राप्ति का नाम गति है।
- प्र. 2 गति की परिभाषा बताओ?
- उ. गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को गति कहते हैं।
- प्र. 3 गतियाँ क्यों होती हैं?
- उ. क्योंकि प्रत्येक भव (गति) की स्थिति मर्यादित है, उस मर्यादा के बाद अवश्य ही किसी न किसी गति को प्राप्त होना पड़ता है।
- प्र. 4 गतियाँ किसके होती हैं?
- उ. गतियाँ संसारी जीवों के होती हैं।

- प्र. 5 **गतियों में जन्म लेने से क्या लाभ है?**
 उ. प्रत्येक गति में जन्म लेने से लाभ कुछ नहीं है अपितु हानि है। सभी गतियों में प्राणी दुखी है।
- प्र. 6 **प्राणी गतियों में क्यों घूमता रहता है?**
 उ. अज्ञान से, मोहवश प्राणी गतियों में घूमता रहता है।
- प्र. 7 **गतियों से कैसे छूटा जा सकता है?**
 उ. समीचीन धर्म की पूर्ण साधना से प्राणी समस्त गतियों के परिभ्रमण से छूट सकता है।
- प्र. 8 **गतियाँ कितनी होती हैं तथा कौन-कौन सी?**
 उ. गतियाँ चार होती हैं-
 1. देवगति 2. मनुष्य गति 3. तिर्यच गति 4. नरक गति
- प्र. 9 **देव गति किसे कहते हैं?**
 उ. देव गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को देव गति कहा गया है।
- प्र. 10 **देव गति में क्या विशेषता है?**
 उ. देव गति में इन्द्रिय-विषयक उत्कृष्ट सुख हैं किन्तु मानसिक दुख भी हैं, यही उसमें विशेषता है।
- प्र. 11 **देव गति में कौन रहते हैं?**
 उ. देव गति में समस्त देव रहते हैं।
- प्र. 12 **देव गति की प्राप्ति कैसे होती है?**
 उ. सराग सम्यक्त्व से, मंद कषाय से जीव को देव गति की प्राप्ति होती है।
- प्र. 13 **मनुष्य गति किसे कहते हैं?**
 उ. मनुष्य गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को मनुष्य गति कहते हैं।
- प्र. 14 **मनुष्य गति में क्या विशेषता है?**
 उ. मनुष्य गति में ही पूर्ण संयम हो सकता है और इसी गति से मोक्ष होगा, यही मनुष्य गति की विशेषता है।
- प्र. 15 **मनुष्य गति में कौन रहते हैं?**
 उ. मनुष्य गति में मनुष्य रहते हैं।

- प्र. 16 मनुष्य गति की प्राप्ति कैसे हो सकती है?
 उ. अल्प आरम्भ करने और अल्प परिग्रह रखने से तथा नम्र भाव रखने से मनुष्य गति की प्राप्ति होती है।
- प्र. 17 तिर्यच गति किसे कहते हैं?
 उ. तिर्यच गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को तिर्यच गति कहते हैं।
- प्र. 18 तिर्यच गति में क्या विशेषता है?
 उ. जीवन भर मूक रहते हुए भी सदा भय एवं पराधीनता विषयक कष्ट सहने पड़ते हैं।
- प्र. 19 तिर्यच गति में कौन रहता है?
 उ. तिर्यच गति में सभी प्रकार के (एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय पर्यन्त) तिर्यच रहते हैं।
- प्र. 20 तिर्यच गति की प्राप्ति कैसे होती है?
 उ. छल-कपट (मायाचार) आदि करने से तिर्यच गति में जाते हैं।
- प्र. 21 नरक गति किसे कहते हैं?
 उ. नरक गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष को नरक गति कहते हैं।
- प्र. 22 नरक गति में क्या विशेषता है?
 उ. नरक गति में प्रतिक्षण घोर असहनीय दुख भोगना पड़ता है, वहाँ पर श्वांस प्रमाण तक सुख नहीं है।
- प्र. 23 नरक गति की प्राप्ति कैसे होती है?
 उ. बहुत आरम्भ करने और बहुत परिग्रह रखने से अथवा पापाचार रूप भावों की संक्लेशता से नरक गति की प्राप्ति होती है।
- प्र. 24 तुम किस गति में रहते हो, तुम्हारी कौन सी गति है?
 उ. मेरी मनुष्य गति है, मैं मनुष्य गति में रहता हूँ।
- प्र. 25 नरक गति में कौन से जीव रहते हैं?
 उ. नरक गति में सदैव नारकी जीव रहते हैं।
- प्र. 26 हाथी किस गति में रहता है ?
 उ. हाथी तिर्यच गति में रहता है।

- प्र. 27 सौधर्म आदि इन्द्र किस गति के जीव हैं?
 उ. सौधर्म आदि इन्द्र देव गति के जीव हैं।
- प्र. 28 सुभौम चक्रवर्ती किस गति में गया?
 उ. सुभौम चक्रवर्ती नरक गति में गया।
- प्र. 29 चारों गतियों में श्रेष्ठ गति कौन-सी है?
 उ. चारों गतियों में श्रेष्ठ गति मनुष्य गति है।
- प्र. 30 मनुष्य गति श्रेष्ठ क्यों है?
 उ. मनुष्य गति में ही प्राणी धर्म, संयम एवं मोक्ष की सिद्धि कर सकते हैं इसलिये मनुष्य गति श्रेष्ठ है।
- प्र. 31 यदि मनुष्य गति पाकर भी कोई धर्म साधन न करे तो वह किसके समान है?
 उ. जो प्राणी मनुष्य गति को प्राप्त करके भी धर्म आदि कार्य नहीं करते हैं, वे पशु सदृश कहे गये हैं।
- प्र. 32 चारों गतियों में जो जीव का परिभ्रमण हो रहा है, क्या वह समाप्त हो सकता है?
 उ. हाँ, चारों गतियों का परिभ्रमण समाप्त हो सकता है।
- प्र. 33 चतुर्गति भ्रमण कैसे नष्ट हो सकता है?
 उ. समीचीन धर्म साधना की पूर्णता से चतुर्गति भ्रमण नष्ट हो सकता है।

गति

भव से भव में घूमना, इसका नाम गति समझना।
 पहली मनुष्य गति हमारी, दूसरी देव गति है प्यारी।
 तीसरी तिर्यच बोझ उठाते, चौथी नरक लड़े-लड़ाते।
 गति-गति के दुख नहीं उठाना, आओ कर लें धर्म साधना॥

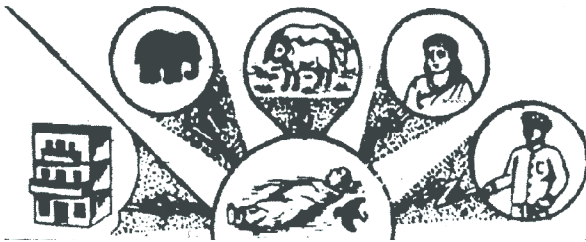
अभ्यास प्रश्न

1. गति की परिभाषा लिखते हुए उसके भेद बताओ?
2. सिद्ध जीव कौन-सी गति में हैं?
3. मक्खी, मच्छर, ऊँट तथा बालक की कौन-कौन सी गतियाँ हैं?
4. चारों गतियों में मनुष्य गति श्रेष्ठ क्यों है?
5. सभी गतियों की परिभाषाएँ लिखते हुए उनकी विशेषता समझाइए।

* * *

बारह भावना

- प्र. 1 भावना किसे कहते हैं?
उ. बार-बार विचार करने को भावना कहते हैं।
- प्र. 2 भावनाएँ कितनी होती हैं?
उ. भावनाएँ अनेक होती हैं, जैसे- सोलह कारण, वैराग्य भावना, समाधि भावना आदि।
- प्र. 3 बारह भावनाओं को छन्द सहित लिखते हुए उनके रचयिता का नाम लिखो?
उ. निम्नांकित बारह भावनाओं के रचयिता पं. भूधरदास जी हैं-
1. अनित्य भावना- राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार॥



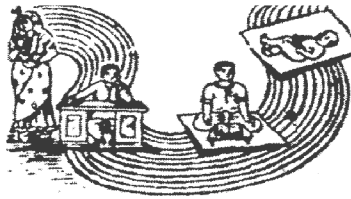
2. अशरण भावना- दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार।
मरती बिरियां जीव को, कोई न राखनहार॥



3. संसार भावना- दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान॥



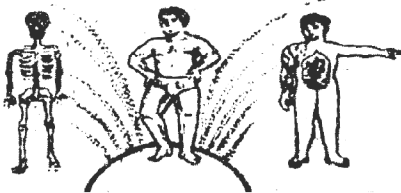
4. एकत्व भावना- आप अकेला अवतरे, मरै अकेलो होय।
यूँ कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय॥



5. अन्यत्व भावना- जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपनो कोय।
घर संपत्ति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय॥



6. अशुचि भावना- दिपै चाम-चादर मढ़ी, हाड़ पीजरा देह।
भीतर या सम जगत में, अवर नहीं घिन-गेह॥

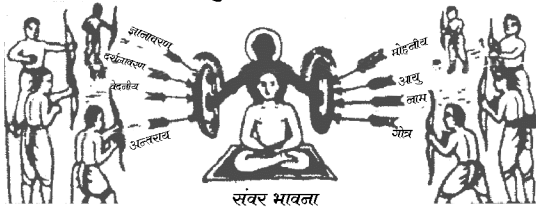


7. आश्रय भावना- मोह-नींदके जोर, जगवासी घूमै सदा।
कर्म-चोर चहुँ ओर, सरवस लूटै सुध नहीं॥



आश्रय भावना

8. **संवर भावना-** सतगुरु देय जगाय, मोह-नींद जब उपशमें।
तब कछु बनहिं उपाय, कर्म-चोर आवत रुकें॥



9. **निर्जरा भावना-** ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शोधै भ्रम छोरे।
या विध बिन निकसै नहीं, पैठे पूरब चोर॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय-विजय, धार निर्जरा सार॥



10. **लोक भावना-** चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष-संठान।
तामें जीव अनादितैं, भ्रमत हैं बिन ज्ञान॥



11. **बोधि दुर्लभ भावना-** धन कन कंचन राजसुख, सबहि सुलभकर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान॥



12. धर्म भावना- जाँचे सुर-तरु देय सुख, चिंतत चिंता रैन।
बिन जांचै बिन चिंतये, धर्म सकल सुख दैन॥



धर्म भावना

अभ्यास प्रश्न

1. भावना किसे कहते हैं?
2. बारह भावनाओं के नाम बताते हुए प्रत्येक का अर्थ समझाइये?
3. बारह भावनाओं में से किन्हीं तीन को छन्द सहित लिखो?
4. बारह भावना के रचयिता का नाम बताओ?
5. बारह भावना से हमें क्या शिक्षा मिलती है। संक्षेप में बताओ?

* * *

उपसर्ग विजेता, परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागरजी महाराज
द्वारा लिखित, सम्पादित एवं संकलित तथा श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन
विराग विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित प्रवचन सत् साहित्य

सं.	नाम	मूल्य
1.	संस्कृत सर्वोदया टीका (वारसाणुवेक्खा) भाग 1-2	150
2.	संस्कृत रत्नत्रयवर्धिनी टीका (रयणसार) भाग 1-2	185
3.	संस्कृत श्रमणप्रबोधनी टीका (पाहुडद्वय)	
	(शोधपूर्ण साहित्य)	
4.	शुद्धोपयोग	40
5.	सम्यग्दर्शन	35
6.	आगम चकखू साहू	25
7.	सल्लेखना से समाधि	30
8.	संत साधना के प्रेरक प्रसंग	20
9.	परम दिगम्बर जैन मुनि (हिन्दी, मराठी, कन्नड़, तमिल, अंग्रेजी)	45
10.	सर्वोदयी दिगम्बर जैन धर्म	30
11.	तीर्थंकर दिव्य दर्शन	30
12.	तीर्थंकर दर्शन	
13.	व्यसन विचार	25
14.	फूल नहीं, हैं काँटे	
15.	संस्कार मुरभि (हिन्दी, गुजराती, मराठी)	18
16.	जिनेन्द्र दर्शन, जिनेन्द्र पूजन	10
17.	आध्यात्मिक शंका-समाधान	30
18.	आध्यात्मिक तत्त्व-चर्चा	40
	(चिंतन साहित्य)	
19.	चैतन्य चिन्तन भाग-1	15
20.	चैतन्य चिन्तन भाग-2	15
21.	चैतन्य चिन्तन भाग-3	15
	(बालोपयोगी साहित्य)	
22.	बाल विज्ञान भाग-1 (हिन्दी, इंग्लिश, मराठी, कन्नड़)	10
23.	बाल विज्ञान भाग-2 (हिन्दी, इंग्लिश)	10
24.	बाल विज्ञान भाग-3	10

25.	बाल विज्ञान भाग-4	10
26.	कर्म विज्ञान भाग-1 (हिन्दी, इंग्लिश)	10
27.	कर्म विज्ञान भाग-2	10
28.	कर्म विज्ञान भाग-3	10

(कथा साहित्य)

29.	नैतिक कथा मंजूषा भाग-1	30
30.	नैतिक कथा मंजूषा भाग-2	30

(अनुवाद साहित्य)

31.	वारसाणुवेक्खा	
32.	परमरत्नार्चना संग्रह	20
33.	सामायिक पाठ (हिन्दी, गुजराती)	10

(पद्य साहित्य)

34.	भावों के विशुद्ध क्षण	15
35.	मुक्तकाञ्जलि भाग-1	15
36.	मुक्तकाञ्जलि भाग-2	15
37.	नव देवता निर्वाण क्षेत्र पूजा	

(संकलित/सम्पादित साहित्य)

38.	साधना से समाधि	20
39.	विमल नित्य पाठावलि	25
40.	आराधना	35
41.	सुभाषित संग्रह	40
42.	आप्त अर्चना	
43.	मानतुंग की अमर भक्ति (सचित्र भक्तामर)	65
44.	साधना	10
45.	अनुप्रेक्षा	10
46.	जिनागम दीप	251
47.	सम्मोद शिखर विधान	
48.	चारित्र शुद्धि व्रत	25
49.	करुणामूर्ति सन्त	100
50.	तपस्वी सम्राट	10
51.	यज्ञोपवीत विधि	
52.	साधना के सोपान	

53.	पदम् पुराण प्रश्नोत्तरी	100
54.	स्तोत्र भारती	51

(एकांकी/नाटक साहित्य)

55.	सत्यमित्र-सत्यदृष्टि
56.	प्रद्युम्न हरण

(पूज्य आचार्य श्री पर आधारित साहित्य)

57.	विरागाभिवंदन अभिनंदन	
58.	निस्पृही संत भाग-1-2	60
59.	विराग सेतु (महाकाव्य) (हिन्दी, गुजराती, प्राकृत) भाग-1	100
60.	विराग सेतु (महाकाव्य) भाग-2	
61.	संत काव्य की परम्परा में आचार्य विरागसागर	65
62.	कमल के महाकमल	
63.	घटनायें ये जीवन की	80
64.	दिगम्बरत्व के चित्ते	150
65.	विराग सिंधु की उर्मियाँ	15
66.	विराग वाटिका	41
67.	भक्ति की झंकार	25
68.	विराग काव्यांजलि	
69.	धर्म पीयूष	30
70.	ऐसे चलो मिलेगी राह	40
71.	दूर नहीं है मंजिल	30
72.	उड़ रे पंछी	10
73.	तीर्थकर वर्धमान	15
74.	पहले देव-पूजा फिर काम दूजा	25
75.	तीर्थकर ऐसे बनो	60
76.	तट की ओर	10
77.	सिर्फ दो प्रवचन	10
78.	इष्टोपदेश (प्रवचन)	
79.	मानतुंग की अमरभक्ति	150
80.	कल्याणक महोत्सव	20
81.	दान तीर्थ	20
82.	धर्म के दश सोपान	20

83. जीवों पर दया करो, शुद्ध शाकाहार करो	20
84. बुराईयाँ ही जेल, अच्छाईयाँ ही मुक्ति	10
85. प्रवचन वर्षा	25
86. कर्तव्यमेव कर्तव्यं	25
87. श्रद्धा प्रसून	25
88. मोक्ष की राह	25
89. विरागामृत-1	30
90. विरागामृत-2	
100. समाधि तंत्र (प्रवचन)	
101. समयोचित शिक्षायें भाग-1	20
102. समयोचित शिक्षायें भाग-2	20
103. समयोचित शिक्षायें भाग-3	20
104. विराग मंथन (हिन्दी, अंग्रेजी)	5
105. रजत पुष्प	51
106. कहानी सबसे सुहानी	30
107. अक्षय निधि (हिन्दी, अंग्रेजी)	10
108. संस्कार की लहरें	20
109. चलो चलें प्रभु दर्शन को	30
110. आध्यात्मिक धर्म प्रवचन	30
111. घर-घर की कहानी	30
112. वारसाणुवेक्खा प्रवचन	125
113. पर्यूषण निधि	15
114. पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 1. धर्मोपदेशामृतम्	200
115. पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 2. दानोपदेशम्	40
116. पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 3. अनित्य पञ्चाशत्	50
117. पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 4-5. एकत्व सप्तति तथा यतिभावनाष्टकम्	85
118. पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 6. उपासक संस्कार	60
119. पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 7. देशव्रतोद्योतनम्	60
120. पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 8-9 सिद्धस्तुति एवं आलोचना	85
121. मेरी भावना	

122. आचार्य विराग सागर साहित्य दर्शन	10
123. मेरी भावना प्रवचन	
124. फॉर यूथ प्रोग्रेस	22
125. रत्नकरण्डक श्रावकाचार प्रवचन भाग-1	100
126. सामायिक पाठ प्रवचन	85
127. विराग संध्या	20
128. विराग अर्चना	40
129. स्वर्ग पुष्प	30
130. षट्लेश्या प्रवचन	
131. ऐसे बनायें घर को स्वर्ग	
132. क्यूँ इतना अभिमान है....	30
133. सिद्धों का खजाना	30
134. अपने नैतिक कर्तव्य	30
135. श्रुतज्ञानवर्धक विधान	20

Video D.V.D

1. आचार्य पदारोहण द्रोणगिरि	2. राष्ट्रीय रजत मुनि दीक्षा जयन्ती, उद्गाँव
3. उपसर्ग पर उत्कर्ष की यात्रा	4. आर्यिका विशान्तश्री माताजी, समाधि
5. व्यसन मुक्ति शाकाहार अभियान	6. लोक और मध्यलोक
7. ज्योतिर्लोक और चन्द्रयात्रा	8. जेल प्रवचन
9. स्कूल प्रवचन	10. शाकाहार रैली
11. अहिंसा रैली	12. न्यायालय में प्रवचन
13. 25 दीक्षायें- श्रवणबेलगोला	14. 11 दीक्षायें-गाँधीनगर
15. 8 दीक्षायें-गिरनारजी	16. 11 दीक्षायें-किशनगढ़
17. 26 दीक्षायें-उदयपुर	18. 25 दीक्षायें-जयपुर
19. 8 दीक्षायें-इन्दौर	20. स्वर्णिम जन्म जयन्ती
21. सिद्धांत एवं आध्यात्मिक प्रवचन (वारसाणुवेक्खा, सामायिक पाठ, तत्त्वार्थ सूत्र, पद्मनंदि पंचविंशतिका भाग-1-14)	22. मातृभक्ति 23. देश के नाम कलंक बूचड़खाने

Audio DVD

- | | |
|---|------------------------------------|
| 1. श्यामा के लाल | 2. साधना के सरताज |
| 3. गुरुवर का जयकारा | 4. प्रवचन वर्षा (दशधर्म, सोलहकारण) |
| 5. श्री विराग सागर नमोऽस्तु ते | 6. करें गुरु भक्ति |
| 7. चलें गुरुवर के द्वार | 8. गीत गुरु के गायेंगे |
| 9. जियो हजारों साल गुरुवर | 10. मेरे मन वीणा के तारे |
| 11. विराग स्वर्णोत्सव | 12. रजतवर्ष मुनिदीक्षा का |
| 13. आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज पूजा | 14. हे सन्मति-सन्मति दो |
| 15. स्वर्णिम जयन्ती याद रहेगी | 16. प्रथम सूरि बुंदेलखण्ड के |
| 17. गुरु नाम की धूम मची है | |

साहित्य प्राप्ति स्थान

1. श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ
चैत्यालय मंदिर, बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : पं. वीरेन्द्र जैन (मो. 9754803220)
2. आचार्य श्री विराग सागर विद्यापीठ (बी.एड.कॉलेज)
पुष्प विहार कॉलोनी, बीना-470113, जिला-सागर (म.प्र.)
3. विराग फाउण्डेशन, द्वारा-श्री अरुण कोटड़िया, II-A विक्रम नगर सोसायटी,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद-380013 (गुजरात)
4. श्री भूपेन्द्र शांतिलाल शाह, 12-B, वर्धमान सोसायटी, डेरी रोड, मेहसाना-
2 (गुजरात) सम्पर्क सूत्र- श्री भूपेन्द्र शाह (मो. 9898494914, 9829452020)
5. विराग महिला मंच, बोरीवली, मुम्बई (महा.)
6. श्रीमती पुष्पा पाटनी, 574, शांतिनगर, जैन मंदिर के सामने,
गोपालपुर वायपास, जयपुर (राज.) मो. 09460765050
7. श्री मनीष पाटनी, नया बाजार, 54, धर्मकांटा के पास, अजमेर (राज.)
मो. 09414002306
8. श्री तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, विष्णु व्यास
मोहता हॉस्पिटल के पास, मोहता चौक, बीकानेर (राज.) मो. 9314962475
9. राष्ट्रीय विराग युवा मंच, अध्यक्ष - श्री राजेश जैन
अंजनी नगर, इन्दौर मो. 09425316970
10. राष्ट्रीय युवा मंच अध्यक्ष - श्री पंकज पाटनी
72, विंध्याचल नगर, एरोडूम रोड, इन्दौर मो. 09425476665
11. डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज'
22/2, रामगंज, जिन्सी, इन्दौर-7 मो. 09826091247